दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 60* ❑ *अंक-16* ❑ *दिल्ली* ❑ *मई (द्वितीय) 2022* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

अप्रैल मास के दलित नायक-2

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर'–जिन्होंने की थी अछूतों के लिए पृथक अछूतीस्थान देश की मांग

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समकालीन, आदि हिन्दू आन्दोलन के प्रवर्तक और उत्तरी भारत के अछूतों में जन–जागृति पैदा करने वाले, महान विद्वान और महान समाज सुधाकर स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' का जन्म वैशाख पूर्णिमा के दिन सन् 1879 को उत्तर प्रदेश के ग्राम सौरिख, तहसील छिबराऊ, जिला फर्रूखाबाद में एक दलित परिवार में हुआ था। इनका बचपन का नाम हीरालाल था। इनके माता–पिता अशिक्षित, गरीब और साधनहीन थे जो इन्हें शिक्षा दिलाने में समर्थ नहीं थे। इसलिए इनका बचपन दलित समाज के बच्चे की भांति बीता।

बालक हीरालाल ने युवावस्था में पदार्पण करते समय तक साधु सन्तों के साथ भ्रमण करते रहने के कारण हिन्दी, संस्कृत, फारसी, मराठी, बंगला, गुरुमुखी आदि भाषाओं का ज्ञान पा लिया। इनके गुरु और सम्बन्धियों ने इनके ज्ञान व भक्ति से प्रभावित होकर, इनका नाम 'हीरालाल' से 'हरिहरानन्द' रख दिया।

गांव में सवर्णों के अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए इनका पूरा परिवार गांव छोड़कर इनके मामा के गांव अमको, सिरसागंज, जिला मैनपुरी (उ.प्र.) आ गये, जहां इनका विवाह राठोर का नगरा, जिला इटावा (उ.प्र.) की श्रीमती हीराबाई के साथ हुआ। कुछ वर्षों के बाद स्वामी जी को फिर से मामा का गांव छोड़ ऊभरी, पीढ़सढ़ा, कानपुर (उ.प्र.) आ जाना पड़ा। इनकी यहां पर चार पुत्रियां हुईं जिनको शिक्षित कर अपने जीवनकाल में ही उनकी शादी कर दी थी।

आदि हिन्दू आन्दोलन के प्रवर्तक के रूप में 19 साल की उम्र से 7 साल तक हरिहर स्वामी उर्फ हरिहरानन्द नाम से आर्य समाज का काम किया। स्वामी जी को 8 भाषाओं का ज्ञान था। इसका उन्हें यह फायदा हुआ कि पंजाब से लेकर बंगाल तक और हिमाचल प्रदेश से लेकर मध्य प्रदेश तक अपनी कर्मभूमि बनाया जहां स्वामी जी ने दलित, शोषित, उपेक्षित लोगों के बीच रात्रि के समय अपने उपदेशात्मक भजन, साखियों और गीतों के माध्यम से हरमोनियम बजाकर दलित समाज में जागृति लाकर उन्हें जाति व वर्ण व्यवस्था के खिलाफ खड़ा करने में कामयाबी पाई।

जिस समय स्वामी जी आर्य समाज के मंच से अछूतोद्धार कर रहे थे उस समय उन्हें आर्य समाज की कथनी व करनी में बड़ा भेद नजर आया। सिरसागंज में स्वामी जी ने चन्दा इकट्ठा कर आर्य समाज के माध्यम से स्कूल का निर्माण किया। स्कूल के उद्घाटन के समय स्वामी जी ने देखा कि अछूत छात्रों को जमीन पर नीचे बैठाया गया है और सवर्ण छात्रों को ऊपर फर्श पर। स्वामी जी ने उसी समय आर्य समाज से त्याग पत्र दे दिया ओर पृथक से स्वयं की अछूतोद्धार संस्था की स्थापना की। कई साल तक सम्पूर्ण देश में इसकी शाखायें कायम करके रात दिन गांव–गांव घूमकर अपने उपदेशों द्वारा दलित समाज को जगाते रहे।

अछूत समुदाय अनपढ़, असंगठित होने, सवर्णों के दवाब में रहने और आर्य समाज की ओर से भी घोर विरोध होने से स्वामी जी को अपना अछूतोद्धार कार्य चलाने में बड़ी कठिनाई आने लगी। इससे उनकी आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय हो गई, पर स्वामी जी ने इसकी परवाह न करते हुए साहस और धैर्य से काम किया। उन्हें घर–घर से महावारी आटा नियमित आता था। दाल, नमक–मिर्च मसाला सौदे के रूप में आ जाता था। स्वामी जी व उनके शिष्यों का भोजन उसी से बनता था। इससे उनका अछूतोद्धार कार्यक्रम अबाध गति से चलता रहा। इससे उनकी लोकप्रियता और बढ़ गई। लोग अब प्यार व श्रद्धाभाव से श्री श्री 108 स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' नाम से पुकारने लगे।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

दलित राजनीति के अनछुये पन्ने

गांधी जी ने अछूतीस्थान की मांग पूरी होने के सन्देह में दी थी 'आमरण अनशन' की धमकी

सवाल यह उठता है कि अंग्रेजी सरकार द्वारा भारत के अछूतों की दुर्दशा सुधारने के लिए 'कम्युनल अवार्ड' नाम से जिन विशेष प्रावधानों की घोषणा की थी, उनके खिलाफ गांधी जी ने अचानक आमरण अनशन की घोषणा क्यों की? क्या ऐस आमरण अनशन से पहले भी उन्होंने अपनी बात मनवाने के लिए आमरण अनशन की घोषणा की थी? इतिहास खंगालने पर पता चलता हे कि इससे पूर्व भी उन्होंने ब्रिटिश अंग्रेजी सरकार के खिलाफ 28 बार आमरण अनशन की घोषणा की थी, जिन्हें बाद में उन्होंने वापिस ले लिया, पर यहां तो 29वीं बार का उनका यह आमरण अनशन सीधा देश के अछूतों को मिलने वाली सहूलियतों–विशेष अधिकारों से जुड़ा था। गांधी जी को तो खुश होना चाहिए था कि सदियों से हिन्दू धर्म में उन्होंने जात–पांत, भेदभाव के जिस नरकीय जीवन को भोगा है अब उन्हें उससे छुटकारा मिल जायेगा और वे भी देश में समता के धरातल पर आकर सम्मान पा सकेंगे। पर गांधी जी तो दिल से कभी नहीं चाहते थे कि यहां के अछूत दलित उनके सनातन धर्म के चंगुल से बाहर निकलकर उनकी बराबरी करें। वह इंगलैंड की राऊंड टेबुल कान्फ्रेंस में बाबा साहब डा. अम्बेडकर से मिली शिकस्त व बेइज्जती को अभी भूले नहीं थे, जहां इन्हीं भारत के अछूतों ने भारत से ढाई सौ टेलीग्राम भेजकर उनके अछूतों का अकेला नेता व प्रतिनिधि होने के दावे को नक्कार दिया था और वहां मेरी बात नहीं मानकर डा. अम्बेडकर को अछूतों का नेता मानकर उनकी पूरी बात सुनी गई। यही नहीं, उस कान्फ्रेंस में डा. अम्बेडकर ने भारत के अछूतों को वोट का अधिकार देने, उनके निर्वाचन में पृथक वार्ड आरक्षित करने, सरकार व निकायों में उनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने, सरकारी पदों व शिक्षण संस्थान में उनका आरक्षण कोटा निर्धारित करने की मांग की थी। ब्रिटिश अंग्रेजी सरकार ने डा. अम्बेडकर की सभी मांगें मानकर उन्हें निर्वाचन में दो वोटों का अधिकार भी दे दिया जिससे वे एक वोट से अपना दलित प्रतिनिधि व दूसरे से सवर्ण उम्मीदवार चुन सकें। इससे निर्वाचन में सवर्ण उम्मीदवार अछूतों के वोटों पर निर्भर हो जायेंगे। निर्वाचन में अछूत मतदाताओं के पृथक वार्ड बनाये जाने से भी वे सवर्णों के दबाव में नहीं रहेंगे, उल्टे सवर्ण मतदाताओं को अछूत मतदाताओं पर जीत के लिए निर्भर रहना पड़ेगा। गांधी जी को यह सब स्वीकार्य नहीं था।

इंगलैण्ड की राऊंड टेबुल कान्फ्रेंस से भारत के दलित अछूतों को एक वोट की जगह दो वोटों का अधिकार दिये जाने पर गांधी जी को अंग्रेज सरकार की नीयत में खोट दिखाई देने लगा। उन्हें लगा कि इन सहूलियत भरे अधिकारों से भारत के अछूत उनके हिन्दू धर्म से अलग हो जायेंगे और फिर वे भी अंग्रेजी हुकूमत से अपने लिए 'अछूतीस्थान' की मांग करने लगेंगे, क्योंकि यह मांग देश के अन्य मंचों से स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' पहले से कर रहे हैं। अंग्रेजी हुकूमत भारत के अछूतों पर पहले से ही मेहरबान है। उसने अछूतों को निर्वाचन में

(शेष पृष्ठ 5 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा टू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, मो. 9810278936, 9891989175

पृष्ठ 1 का शेष...स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर'–जिन्होंने की थी अछूतों के लिए पृथक अछूतीस्थान देश की मांग

स्वामी जी का उपदेश था कि अगर यश प्राप्त करना है तो दुःखी लोगों की सेवा करनी चाहिए और समाज की कुरीतियों को समूल नष्ट करने का मुकाबला पूरी ताकत से करना चाहिए।

अछूतों में राजनैतिक चेतना जाग्रत करने के लिए स्वामी जी ने आदि हिन्दू आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन धार्मिक न होकर पूर्णतः राजनैतिक था। उन्होंने 'आदि हिन्दू कान्फ्रेंस' नाम से अछूतों का एक मंच तैयार करके 1917 में कानपुर में 'पूर्ण स्वाराज्य' की मांग की। स्वामी जी ने कहा–''भारत के हिन्दू मुसलमानों के साथ–साथ अछूतों को भी आजादी चाहिये, क्योंकि आजादी के सच्चे हकदार अछूत हैं, जिनके श्रम और शक्ति पर देश का उत्पादन व उत्थान निर्भर है जो धरती का सीना चीर कर अन्न उगाता है। दुःख की बात है कि वही भूखा, नंगा, शोषित है, पशुओं से भी बदतर जिन्दगी जीने को मजबूर है। मुट्ठी भर सवर्ण हिन्दुओं ने उन्हें श्रम के बदले गुलामी की बेड़ियां पहना रखी हैं। आजादी के असली हकदार तो अछूत ही हैं। उन्हें भी अपना समता भरा अछूतीस्थान चाहिए।

अंग्रेजों ने भी 'अंधेर नगरी चौपट राजा' की कहानी चरितार्थ की है। उन्होंने सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों को उनकी दरबार बन्दगी व फरमादरबारी के एवज में जागीरें, जमींदारी, सम्पत्ति और नकदी के साथ–साथ ऐशो आराम, अय्याशी ओर अत्याचारों की छूट दे रखी है और इनका जुल्म अछूतों पर होता है। उनकी बहू–बेटियां सवर्णों की काम पिपासा की शिकार होती हैं। उनके घिनौने कृत्य में बाधक बनने वाले पिता, भाई, पति को मौत के घाट उतार दिया जाता है। उन्हें झूठे मुकदमों में फंसाकर जेलों में सड़ने के लिए डाल दिया जाता है और सरपदस्त सरकार उनके कुकृत्यों पर पर्दा डाल देती है। स्वामी जी ने पूरे जीवन रुढ़िवादी सनातन धर्मी हिन्दुओं का घोर विरोध किया और कांग्रेस पार्टी के भी घोर आलोचक रहे क्योंकि वह भी दलितों के समता के अधिकारों को दिलाने के प्रति दिखावे का काम करती थी।

स्वामी जी का दलितोद्धार आन्दोलन राजनीतिक और सामाजिक था। उन्होंने 1905 में दिल्ली में 'अछूत आन्दोलन' का शुभारम्भ किया। यहां पर जाटव वीर रत्न देवीदास जाटव और जगतराम जाटव ने स्वामी जी को पूर्ण सहयोग दिया। उन्होंने मिलकर अखिल भारतीय स्तर पर 'अछूत महासभा' का गठन किया। इसके माध्यम से पूरे देश के अछूतों को संगठित करके उनके अन्दर अपने अधिकारों के लिए जन चेतना जाग्रत की।

स्वामी जी का नाम और काम की पूरे देश में चर्चा होने लगी थी। 1922 में स्वामी अछूतानन्द की अध्यक्षता में दिल्ली में 'अखिल भारतीय जाटव सम्मेलन' का आयोजन पुराने किला के पास किया गया। जाटव रत्न देवीदास जाटव इसके संयोजक थे। इस सम्मेलन में हजारों अछूतों ने भाग लेकिर अछूतों के सत्ता, सम्पत्ति में बराबर की मांग करते हुए एक मांग पत्र (चार्टर्ड आफ डिमांड) तैयार किया गया जिसे इंगलैंड से भारत के अछूतों की दशा और स्थिति का आकलन करने आये इंगलैंड के सम्राट पंचम जार्ज के सुपुत्र प्रिन्स आफ वेल्स' को सौंपा गया जो स्वयं इस विराट सम्मेलन में पधारे थे। स्वामी जी ने भारत के अछूतों की ओर से उनका स्वागत में अभिनंदन पत्र भेंट करते हुए 17 सूत्रीय मांग पत्र भी भेंट किया जो इस प्रकार है–

1. आदि हिन्दुओं का पृथक से चुनाव हो तथा पृथक से प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाए।
2. अछूतों की प्रगति हेतु स्कूल, विद्यालय खोले जाएं।
3. अस्पृश्यता निवारण हेतु कड़ा कानून बनाया जाए।
4. शिक्षित अछूतों को शासकीय सेवा में लिया जाए।
5. स्थानीय संस्थाओं जैसे नगरपालिका, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ग्राम पंचायत, टाउन एरिया, नोटीफाइड एरिया आदि में भी अछूत सदस्य मनोनीत किए जाएं।
6. अछूतों को व्यापार एवं दुकानदारी कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए।
7. बेगार प्रथा को समूल समाप्त किया जाए।
8. अछूतों को सवर्ण हिन्दुओं के समान सामाजिक अधिकार प्राप्त हों।
9. प्रत्येक शासकीय, अशासकीय कमेटियों में संख्या के अनुपात से अछूतों को प्रतिनिधित्व दिया जाए।
10. अछूत छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाए।
11. अछूत बाहुल्य गांवों में अछूत विद्यालय स्थापित किए जाएं।
12. पुलिस तथा फौज में अछूतों को भी प्रवेश दिया जाए।
13. मजदूरी में वृद्धि की जाए।
14. ग्रामीण चौकीदार पद पर अछूत भी रखे जाएं।
15. अछूत कृषकों को पड़ती भूमि के पट्टे दिए जाएं।
16. प्रांतीय विधान सभाओं में अछूत भी लिए जाएं।
17. उपरोक्त 16 मांगों को देशी राज्यों में भी लागू किया जाए।

इसको लेकर युवराज प्रिन्स आफ वेल्स अपने घर इंगलैन्ड पहुंचे तो उन्होंने भारत के करोड़ों अछूतों की करुणा कहानी अपने पिता सम्राट पंचम जार्ज को बताई और कहा कि सवर्ण लोग किस प्रकार

अछूतों के साथ निरकुंशता व अमानवीय भेद–भाव का व्यवहार कर रहे हैं। उनको धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। इस पर लन्दन के सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया का भारत के वायसराय के लिए सख्त आदेश भेजा गया कि अछूतों का प्रत्येक नगर पालिका में एक–एक सदस्य रखा जाए। इसी प्रकार टाउन एरिया, नोटाफाइड एरिया, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड कौन्सिल आदि सभी शासकीय संस्थाओं में एक–एक मेम्बर अछूतों को मनोनीत किया जाए। इस आदेश का कड़ाई स पालन किया गया। इससे अछूतों को काफी लाभ मिला। इस प्रकार से अछूतों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

स्वामी अछूतानन्द द्वारा दिल्ली के जाटव सम्मेलन में पारित 'चार्टर्ड आफ डिमांड' की मांगों पर अंग्रेजी सरकार ने गहनता से विचार किया और उनकी दुर्दशा को सुधारने और उन्हें सत्ता, सम्पत्ति, सरकारी नौकरी, शिक्षा, निर्वाचन में वोट का अधिकार देने, उनके लिए निर्वाचन, शिक्षा संस्थानों व सरकारी नौकरी में आरक्षण देने के लिए इंगलैंड में 1930–31 में बुलाई गई–राऊंड टेबुल कान्फ्रेंस' का आधार बना। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने इस 'राऊंड टेबुल कान्फ्रेंस' में भारत के अछूतों का पक्ष रखते हुए भी इसी 'चार्टर्ड आफ डिमांड' की मांगों पर जोर दिया। ब्रिटिश सरकार ने भी इन मांगों पर विचार करके भारत के अछूतों को सरकार और सत्ता में बराबर की हिस्सेदारी देने के लिए 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की, जिसमें अछूतों को निर्वाचन में दो वोट देने का अधिकार दिया गया। एक वोट से वे अपने में से अपना नुमायन्दा तथा दूसरे वोट से सवर्ण जाति का नुमायन्दा चुन सकते थे। उनके लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र बनाने, निर्वाचन में उनकी आबादी के अनुपात में सीटें आरक्षित करने, सरकारी नौकरी व शिक्षण संस्थानों के पदों में भी उनके लिए कोटा आरक्षित किया गया। यह 'कम्युनल अवार्ड' अंग्रेजी सरकार द्वारा भारत के अछूतों के लिए गुलामी से छुटकारे का दस्तावेज था जो उन्हें सत्ता, सम्पदा, शिक्षा, रोजगार–सभी जगह आरक्षण देकर उन्हें सरकार व समाज में समता, न्याय, भाईचारा, स्वतंत्रता, सम्मान प्रदान करने का प्रावधान था। पर महात्मा गांधी अछूतों को एक साथ दो वोटों का अधिकार देने और उनके लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र बनाये जाने से खुश नहीं थे। उन्होंने अंग्रेज सरकार द्वारा अछूतों को दी गई इन सहूलियत व अधिकारों के खिलाफ 'आमरण अनशन' शुरू कर दिया। देश के अछूत व सवर्णों के बीच गांधी जी के मरने पर खून खराबा को देखकर बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने गांधी जी के प्राण बचाने और जीवनदान देने के लिए अछूतों को मिले प्रावधानों व अधिकारों को लौटा दिया। बाद में गांधी जी व बाबा साहब डा. अम्बेडकर के बीच अछूतों की दुर्दशा सुधारने और उन्हें सत्ता व समाज में बराबरी के स्तर पर लाने के लिए एक 'करारनामा' हुआ जिसे 'पूना पैक्ट' के नाम से जाना जाता है। इसमें अछूत–दलितों को निर्वाचन, सत्ता, सरकारी नौकरी व शिक्षण संस्थानों में उनकी आबादी के अनुपात में 'आरक्षण' दिया जाना स्वीकार किया गया जिसे बाद में भारत के संविधान में भी स्वीकार करके इसे संवैधानिक अधिकार बना दिया गया।

आज देश के अछूतों (दलितों) को आरक्षण का जो संवैधानिक अधिकार मिला है, उसकी नींव स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' के द्वारा रखी गई थी और आज जो लोग अछूत व दलितों के 'आरक्षण' पर सवाल उठाते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि यह 'आरक्षण' कोई 'भीख' में नहीं, स्वामी अछूतानन्द के मेहनत तथा बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा गांधी जी को जीवनदान देने के बदले में मिला है और यह तब तक चलता रहेगा, जब तक सत्ता व समाज में भारत के अछूत–दलित सवर्णों के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक स्तर पर नहीं आ जाते, तब तक यह आरक्षण कायम रहेगा।

स्वामी अछूतानन्द निर्भीक, ओजस्वी वक्ता थे। लोग उनका भाषण सुनने के लिए कोसों पैदल चलकर आते थे और उनके विचारों को गौर से सुनते थे। स्वामी जी अपने उद्‌बोधन में अक्सर कहते थे–

सभ्य सबसे हिन्द के
प्राचीन हैं हकदार हम।
या बनाया शूद्र हमको,
थे कभी सरदार हम।।
अब नहीं हैं वह जमाना
जुल्म 'हरिहर' मत सहो।
तोड़ दो जंजीर जकड़े,
क्यों गुलामी में रहो।।

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' कोरे उपदेशक या समाज सुधारक ही नहीं थे। वह संत गुरु रविदास और सद्‌गुरु कबीर दास की भांति कवि भी थे। उन्होंने दलित संत कवियों की भांति अछूतों (दलितों) के उद्धार और जागरण के लिए कई साहित्यिक कृतियों की रचना की जिनमें से प्रमुख हैं :

1. शम्बूक बलिदान (नाटक)
2. मायानन्द बलिदान (जीवनी)
3. अछूत पुकार (भजनावली)
4. पाखण्ड खण्डनी (मीमांसा)
5. आदिवंश का डंका (कवितावली)
6. रामराज्य न्याय (नाटक)

'शम्बूक बलिदान' नाटक में राम के अन्याय के विरुद्ध स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' ने राम के अत्याचार को उजागर किया है। वह शम्बूक ऋषि के माध्यम से पूछते हैं–

शम्बूक शूद्र तप करत विचारा।
निर्दोष, राम ने क्यूं मारा।।

'अछूत पुकार' भजनावली में स्वामी जी जाति के कल्याण मान–मर्यादा और स्वाभिमान की रक्षा हेतु बलिदान देने की शिक्षा देते हुए कहते हैं–जाति पर कुर्बान होना, आओ हम से सीख जाओ। समाज के कायर और डरपोक लोगों में जोश व शक्ति प्रदान करते हुए वे कहते हैं–

जाति जोश जिसमें न जरा।
वह भार धरा पर धरा।।
जीवित तो दिखता सबको।

पर असली वह मुरदार मरा।।

'आदिवंश का डंका' काव्य संग्रह में स्वामी जी ने पापों द्वारा किये गये अत्याचारों और अन्यायों की कड़ी भर्त्सना की है। इसमें वह अपनी पीड़ा और वेदना यों व्यक्त करते हैं–

मैं अछूत हूं, छूत न मुझ में
फिर क्यों जग ठुकराता है?
छूने में भी पाप मानता।
छाया से भी घबराता है।।

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' भारत में आदिवासियों के अधिकारों के विषय में बताते हुए कहते हैं–

विदित संसार में हम,
आदिभारत के निवासी हैं।
यही इतिहासकारों ने,
सभी लिखकर बताया है।।
यहां मध्य एशिया से
आर्य शरणार्थी आये।
हमारा छीन घर–जर,
आर्यों ने हमें
बहुत विधि सताया है।।

स्वामी जी ने देश में घूम–घूम कर सामाजिक बुराइयों–अशिक्षा, बाल विवाह, दहेज, तेरहवीं आदि पर होने वाले अनावश्यक खर्च को रोकने के लिए लोगों में जन चेतना जाग्रत की। उन्होंने 1927 को कानपुर की एक विशाल सभा में लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा– ''जिस प्रकार भारत में सवर्ण हिन्दू और मुसलमान आजादी चाहते हैं, उसी प्रकार अछूतों (दलितों) को भी पूर्ण आजादी चाहिये। वास्तव में आजादी के सच्चे हकदार वहीं हैं।''

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' जी अछूतों को ललकारते हुए अपने उद्‌बोधन में कहते थे–

ऐ आदिवंश वालो,
जागो हुआ सवेरा।
अब मोह नींद त्यागो,
देखो हुआ उजेरा।।
अन्याय की निशा से,
अन्धेरे से न डरना।
होगा उदय तुम्हारा,
भागेगा दुख घनेरा।।

स्वामी जी ने अपनी साहित्यिक कृतियों के अलावा 'आदि हिन्दू' समाचार पत्र भी प्रकाशित किया, जिससे दलितों में स्वाभिमान जगाने का बहुत बड़ा काम किया। उन्होंने 1927 में 'आदि हिन्दू मंच' से कानपुर में पूर्ण स्वराज्य की मांग की और अछूतों की आजादी का दावा प्रस्तुत करते हुए अछूतीस्थान की मांग की। स्वामी जी ने 1930 में फर्रूखाबाद जिले के मुख्यालय फतेहगढ़ में क्वीन विक्टोरिया की मूर्ति के पास मनु, जनेऊ, गीता और रामायण को जलाया। इससे उस समय सारे उत्तर भारत में अछूत समाज की आंखें खुल गईं। इससे स्वामी जी को हर जगह से काफी सहयोग मिलने लगा।

सन् 1928 में बाबा साहब डा. अम्बेडकर से स्वामी जी की प्रथम भेंट 'आदि हिन्दू सम्मेलन' बम्बई में हुई। बाबा साहब डा. अम्बेडकर स्वामी जी के अछूतोद्धार व दलित जागरण कार्यों से बहुत प्रभावित हैं। इसलिए उन्होंने उस सम्मेलन में स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' को अपना गुरु मानते हुए उन्हें 'महर्षि' के उद्‌बोधन से सम्मानित किया। उन्होंने अछूतों के उद्धार के लिए स्वामी जी के साथ मिलकर काम करने को कहा।

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

सम्पादकीय का शेष...गांधी जी ने अछूतीस्थान की मांग पूरी होने के सन्देह में दी थी 'आमरण अनशन' की धमकी

एक वोट की जगह दो वोट का अधिकार दे दिया। अब अगर अछूत अपने लिये पृथक 'अछूतीस्थान' दिये जाने की मांग करते हैं तो वह उन्हें 'कम्युनल अवार्ड' की तरह घोषणा करके अलग 'अछूतोस्थान' थमा देगी। मुस्लिम लोग पहले ही अंग्रेजी हुकूमत से अलग पाकिस्तान दिये जाने की मांग कर रहे हैं ऐसे में अछूतों के भी अलग हिन्दुओं से अलग निकल जाने पर हिन्दू तो 10–15 फीसदी रह जायेंगे, फिर उनका हिन्दुस्तान की आजादी का आन्दोलन धराशायी हो जायेगा और देश को अंग्रेजी सरकार से आजाद कराने की मांग बेकार हो जायेगी और उनकी अब तक की मेहनत सब मिट्‌टी में मिल जायेगी। ऐसे में अकेले में मिलने वाली मौत से तो उन्हें इन अछूतों को मिले विशेष अधिकारों पर रोक लगाने के लिए अपनी जिन्दगी दाव पर लगाना उचित रहेगा। इसे रुकवाने के लिए 'आमरण अनशन' की घोषणा ही इसका एकमात्र इलाज है। इससे जहां भारत का सनातनी हिन्दू जाग जायेगा, वहीं डा. अम्बेडकर के साथ–साथ अंग्रेजी हुकूमत व यहां के अछूतों का सपना भी चूर–चूर हो जायेगा और वे हिन्दू धर्म में ही बने रहकर अपने उत्थान के लिए हमारी ओर देखते रहेंगे।

गांधी जी के अंग्रेजी सरकार द्वारा दिये गये 'कम्युनल अवार्ड' को वापिस कराने के लिए किये गये 'आमरण अनशन' करने का षड्‌यंत्र हिन्दू नेताओं के दबाव में बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा इसे वापिस करने की घोषणा से कामयाब हो गया। देश के अछूत अपनी दुर्दशा सुधारने के लिए सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक के मिले विशेष अधिकारों को वापिस लौटाने से गांधी जी के हाथों ठगे गये। अब वे अंग्रेजी हुकूमत को उनके अहसानों के लिए न तो धन्यवाद कर सकते थे और न ही अब भविष्य में उनसे अपने उत्थान व कल्याण के लिए कोई उम्मीद कर सकते थे।

उधर 'पूना पैक्ट' समझौते में अछूतों की दुर्दशा को ठीक करने, उन्हें समाज व सरकार में यथोचित सम्मान दिलाने, उनकी शिक्षा–नौकरी में आरक्षण की विशेष सुविधायें देने के सभी आश्वासन झूठे साबित हुए। गांधी जी भले ही अपने भाषणों में लगातार कहते रहे कि 'छुआछूत हिन्दू धर्म में कलंक है।' पर इस कलंक को हिन्दू धर्म से खत्म कराने

के लिए उन्होंने न तो आमरण अनशन किया और न ही ऐसे लोगों का कभी बायकाट किया जो हिन्दू धर्म में छुआछूत को धार्मिक कृत्य मानते हुए मनुस्मृति को भारत के संविधान से ऊंचा मानते हैं।

मानवीय अधिकारों से वंचित, मानव निर्मित छुआछूत के नरकीय जीवन जी रहे ऐसे भारत के अछूतों को गांधी जी ने 'हरिजन' का नया नाम देकर समाज में उन्हें दया का पात्र बनाने की भरपूर कोशिश की पर यहां भी वे असफल रहे, क्योंकि हिन्दू समाज के लोग तो 'हरिजन' का मतलब 'वेश्या के पुत्र' यानि अवैध संतान ही समझते थे, ऐसे में उन्हें गांधी जी द्वारा दिये इस नये नाम से और घृणा ही मिली। फिर गांधी जी का उनकी हरिजन बस्ती में रहना और खान–पान में अपनी बकरी के दूध का इस्तेमाल करना दिखावा ही नहीं, उनके जले पर नमक छिड़कने जैसा था।

भारत की अंग्रेजी सरकार द्वारा देश के अछूतों के जीवन में बदलाव के लिए 'कम्युनल अवार्ड' के तहत जिन विशेष अधिकार दिये जाने की घोषणा कीं, गांधी जी के पुणे की यरवदा जेल में इसके विरोध में किये गये आमरण अनशन से उठी हिन्दुओं और अछूतों के बीच बढ़ रहे खून खराबे की आशंका ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर के मन से न चाहते हुए भी गांधी जी के प्राण बचाने के लिए देश के अछूतों को मिली 'कम्युन अवार्ड'–की संजीवनी को अंग्रेजी सरकार को लौटाना पड़ा। इसकी एवज में देश के अछूतों की दशा सुधारने के लिए गांधी जी व डा. अम्बेडकर के बीच एक 'करारनामा' (समझौता) हुआ जिसे 'पूना पैक्ट' के नाम से जाना जाता है। इस पर अन्य विशिष्ठ लोगों के साथ स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' के भी 'गवाह' के रूप में दस्तखत हैं।

इन 'पूना पैक्ट' समझौते में गांधी जी ने अगले 10 सालों में छुआछूत मिटाकर देश के अछूतों को समाज में समता, सम्मान, न्याय और सत्ता व सम्पदा में बराबर की हिस्सेदारी, निर्वाचन में उनकी आबादी के अनुपात में सीटों का आरक्षण तथा सरकारी–नौकरियों, शिक्षण संस्थानों व अन्य प्रतिष्ठित संस्थाओं में भी आरक्षण लागू करने का प्रावधान था। पर गांधी जी ने देश के अछूतों को 'पूना पैक्ट' समझौते के तहत आगामी 10 वर्षों में सत्ता व समाज में जिस बराबरी की बात की गई थी, वह न तो गांधी जी जीवित रहते पूरा कर पाये, और न ही देश की आजादी के बाद भारत के संविधान में अछूतों को सत्ता, सम्पदा, न्याय, शिक्षण संस्थाओं व सरकारी–नौकरियों और प्रतिष्ठानों में उनकी आबादी के अनुपात में आरक्षण होते हुए भी सवर्णों की मनु मानसिकता के कारण न कभी वह 'आरक्षण कोटा' भरा गया और न ही उनके उत्थान के लिए पंचवर्षीय योजना के बजट में रखी गई धनराशि का पूरी तरह दलितों के उत्थान में उपयोग में लाया गया।

'पूना पैक्ट' समझौते की शर्तों को पूरा करने और अछूतों के उत्थान के प्रावधानों को लागू करने के लिए गांधी जी ने देश के हिन्दुओं का हृदय परिवर्तन कर 'हरिजन सेवक संघ' संस्था खड़ी की, 'हरिजन' अखबार भी निकाला और खुद नई दिल्ली की मन्दिर मार्ग स्थित भंगी बस्ती (वाल्मीकि बस्ती) में कुटी बनाकर रहे, पर यह सब उनका 'दिखावा' ही साबित हुआ। इससे न सवर्ण हिन्दुओं का अछूतों (दलितों) के प्रति हृदय परिवर्तन हुआ, न ही उनके प्रति व्यवहार में बदलाव आया। गांधी जी स्वयं सनातनी हिन्दू थे और अपने इस सनातन धर्म को बचाने के लिए वह सब कुछ करने के लिए तैयार थे। वह दिखावे के लिए भले ही हरिजन बस्ती में रहे, पर यहां भी उनका खान–पान पहनावा सब सनातनी था। इसलिए हरिजन बस्ती में रहते हुए भी 'रामधुन' बजाते हुए वह अपने सनातन धर्म को बचाते हुए उसे और मजबूत कर रहे थे। अछूत इसी बात से खुश थे कि गांधी जी बिड़ला घराने को छोड़कर उनकी बस्ती में उन्हें न्याय दिलाने के लिए रह रहे हैं।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर गांधी जी के इस नाटक को भली–भांति समझते थे। वह गांधी जी की इस मक्कारी को भी समझते थे कि उन्होंने अछूतों को मिले 'कम्युनल अवार्ड' के प्रावधानों व अधिकारों को लौटाने के यरवदा की जेल में आमरण अनशन क्यों किया? गांधी जी को सन्देह था कि अछूतों को मिले इन अधिकारों से वे अंग्रेजी हुकूमत व डा. अम्बेडकर को ही श्रेय देते हुए सनातनी हिन्दू धर्म से सदा के लिए किनारा कर लेंगे। इससे हिन्दू धर्म अल्पसंख्यक हो जायेगा। वह अछूतों की आबादी के हिन्दू धर्म से निकल जाने के बाद कभी भी गैर हिन्दू धर्मों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर गांधी जी द्वारा अंग्रेजी हुकूमत द्वारा भारत के अछूतों को मिले 'कम्युनल अवार्ड' के विशेष अधिकारों को रुकवाने के लिए किये गये 'आमरण अनशन' को उनके विरुद्ध एक षड्यंत्र मानते थे। उन्होंने गांधी जी के प्राण बचाने के लिए 'कम्युनल अवार्ड' छोड़ने की घोषणा कर भले ही अछूतों के हितों के लिए 'पूना पैक्ट' को स्वीकार करके उस पर हस्ताक्षर किये, पर जब उन्होंने 'पूना पैक्ट' की शर्तों पर कोई ठोस अमल होता न देखकर यह अनुमान लगाया कि गांधी जी देश के अछूतों को समता, स्वतंत्रता, न्याय व सम्मान के अधिकार न देकर उनहें सनातनी हिन्दू धर्म का शूद्र वर्ण में गुलाम ही बनाये रखना चाहते हैं, तो उन्होंने गांधी व हिन्दू धर्म की पोल खोलते हुए 1935 में महाराष्ट्र की येवला अछूत महासभा में हिन्दू धर्म छोड़ने की घोषणा करते हुए कहा कि ''हिन्दू धर्म में पैदा होना मेरे बस की बात नहीं थी, पर हिन्दू धर्म में रहकर मैं मरूंगा नहीं, यह मेरे हाथ में है।''

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने 1935 में येवला की अछूत महासभा में हिन्दू धर्म छोड़कर नया धर्म अपनाने की जो घोषणा की थी उसे उन्होंने 14 अप्रैल, 1956 में नागपुर की धम्म दीक्षा सभा में बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर पूरा किया। इस दिन उनके साथ 10 लाख अछूतों ने भी अपने पूर्वजों के पुराने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर हिन्दू धर्म से अलविदा ली। बाबा साहब डा. अम्बेडकर का यह धर्म परिवर्तन गांधी जी को एक जवाब था, जहां वे देश के अछूत–दलितों को बंधक बनाकर अपने सनातनी हिन्दू धर्म के दडबे में बनाये रखना चाहते थे। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने देश के अछूतों की बौद्ध धर्म के समता, करुणा, मैत्री भरे नये धर्म में प्रवेश कराकर उन्हें विश्व के बौद्धों के साथ जोड़कर नया जीवन प्रदान किया। •

हिमायती
7 / मई (द्वितीय) 2022 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 14 मई, 2022

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

साहित्य ही समाज को गढ़ता है

सलिल सरोज

समाज का ऐसा कोई वर्ग नहीं है जो कभी न कभी, किसी न किसी रूप में साहित्य के किसी न किसी विधा के संपर्क में न आया हो। इतिहास से लेकर अब तक की बात करें तो भित्तिचित्र, शिलालेख, मिट्टी और कांसे के बर्तनों पर उकेरे चित्र, पत्तों पर लिखे शब्द, लोक संगीत, देववाणी, सत्संग, भजन, कीर्तन, उपदेश, गांव के चौपालों पर मंडली द्वारा गाया जाने वाला संगीत, शादी–विवाह के अवसर पर वर पक्ष को वधू पक्ष की ओर से दी जाने वाली गालियां, दादी–नानी की कहानियां, चित्रकथाएं, कॉमिक्स, कार्टून, नवीन संगीत, नृत्य, नाटक एवं अन्य कई और तरह की साहित्यिक विधाएं जन मानस में रची बसी होती हैं। साहित्य केवल एक खास वर्ग के लिए ही नहीं होता, नहीं तो आइंस्टीन और कलाम जी जैसे वैज्ञानिक संगीत के मुरीद न होते। साहित्य का हर रूप समाज को जोड़ने की कोशिश ही करता है। यह किसी दायरे में बंधा हुआ नहीं होता। अब्दुर्रहीम खानेखाना अगर कृष्ण की भक्ति कर सकते हैं तो काशी में गंगा घाट पर बैठे सन्त–महात्मा सूफी गीत भी गा सकते हैं। साहित्य मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने की सबसे बड़ी वजह है।

''यूनान, मिस्र, रोमों
सब मिट गए जहां से
बाकी मगर है
फिर भी नामो–निशां हमारा
कुछ बात है कि
हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है
दुश्मन दौरे जहां हमारा।''

भारत से पुरानी और भव्य सभ्यताएं भी गर्त में चली गईं, जो अपने साहित्य को संभालकर नहीं रख पाईं। सबसे ज्यादा पढ़ने–लिखने वाले देशों में एक देश रूस का साहित्य बहुत ही समृद्ध माना जाता है। वहीं मेट्रो, रेल, बस लिफ्ट हर जगह, हर उम्र का व्यक्ति कुछ न कुछ पढ़ता नजर आ ही जाता है। पुश्किन, लरमनतेंव, गोर्की, दोस्तोवेस्की जैसे विद्वानों की धरोहर को आज भी संभालकर रखा गया है। हालांकि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से रूसी भाषा का स्वरूप जरूर बदला है लेकिन लोगों के पढ़ने की रुचि आज भी बरकरार है। भारत की साहित्यिक धरोहर भी काफी विशाल है। प्रश्न है कि हमें क्या मिला और हम कितना अगली पीढ़ी के लिए बचा पाए। भारत के बारे में मैक्समूलर, रोमां रोलां, हेनरी रोरिक जैसे विद्वानों ने बेहतरीन बातें लिखी हैं। कितनों ने अपने जीवन की सफलता का पूरा श्रेय ही भारतीय संस्कृति के अध्ययन को दे दिया है। मूलतः यह प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं रह जाती है कि जो साहित्य जितना उदार और सीखने–सिखाने को आतुर होता है वह उतना ही ज्यादा दीर्घायु होता है।

मेरा मत है कि मनुष्य बने रहने की प्रथम शर्त है कि आप समाज के साहित्य से किसी न किसी रूप में जुड़े रहें। लिखते रहें, पढ़ते रहें और दूसरे व्यक्तियों को बताते भी रहे। चूंकि मैं कभी भी विज्ञान का अच्छा विद्यार्थी नहीं रहा और भाषाएं मुझे हमेशा आकर्षित करती थी, इसीलिए साहित्य की ओर रूझान बचपन से ही हो गया। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में रूसी और तुर्की भाषा सीखने के कारण विदेशी साहित्यकारों को भी पढ़ने का मौका प्राप्त हुआ। बचपन में नंदन, चम्पक, बालहंस, नन्हें सम्राट, चंदामामा, अहा जिंदगी, कॉमिक्स ने मेरी इस रुचि को बनाए रखा। इंग्लिश हॉनर्स के दौरान चिनुआ अचेबे की थिंग्स फालेन अपार्ट, चार्ल्स डिकेंस की हार्ड टाइम्स, विक्रम सेठ की एक सुटेबल बॉय, अरुंधति रॉय की गॉड ऑफ स्माल थिंग्स, सलमान रशदी की सैटेनिक वर्सेज, ओशा की संभोग से समाधि की ओर, इस्मत चुगताई और सआदत हसन मंटो की लघुकथाओं ने इस भूख को और भी बढ़ा दिया। अपने कोसे से इतर जाकर गजल, नज्म, जीवनी, साक्षात्कार, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, उपन्यास पढ़ता ही चला गया। यह कहना आसान नहीं होगा कि मैं सब समझता भी चला गया लेकिन सैनिक स्कूल में पढ़ने के कारण आए अनुशासन के कारण जो भी किताब उठाई, बिना पढ़े हुए मैंने नहीं छोड़ी।

इसी दौरान जयशंकर प्रसाद की कामयनी, रामधारी सिंह 'दिनकर' की रश्मिरथी, मैथिली शरण गुप्त की भारत भारती जैसी रचनाओं से रूबरू हुआ। चूंकि मैं खुद ट्यूशन पढ़ाया करता था इसलिए पैसे की कोई कमी नहीं हुई लेकिन मेरी रुचि ने ही लगभग ३०० साहित्यिक पुस्तकों को मेरी निगाहें के सामने से परिलक्षित करवाया। कुछेक किताबें रूह में बस गईं। धर्मवीर भारती की 'गुनाहों का देवता' उनमें से ही एक पुस्तक है। नायिका के मरने का वर्णन इतना हृदयविदारक है कि कोई भी पाठक रोए बगैर उसे पूरा नहीं कर सकता और मैं भी कई बार रोया। हालांकि इसी पर बनी फिल्म में जीतेन्द्र साहब ने काफी अच्छी कोशिश की लेकिन धर्मवीर साहब

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

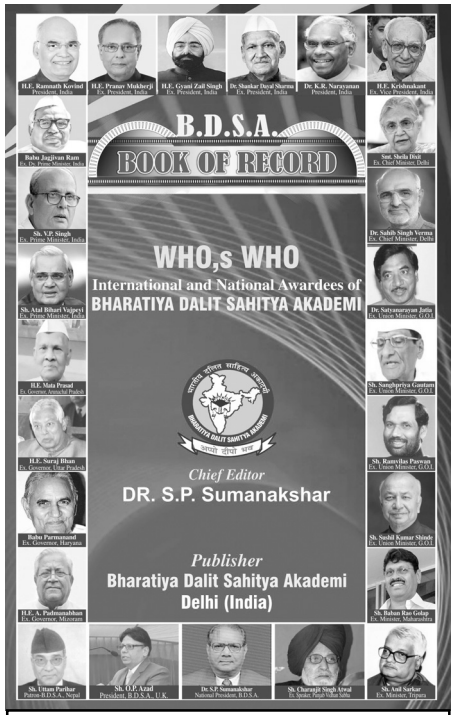

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारिों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली–110009
मोबाइल :
9891989175, 9810278936

का कोई जोड़ नहीं। हालांकि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'सूनी चौखटें' और प्रेमचन्द का 'वरदान' भी प्रेम कहानी का बेजोड़ उदाहरण है लेकिन गुनाहों का देवता की मिशाल नहीं। धर्मवीर भारती ने मानो सब आंखों के सामने लाकर रख दिया हो। मैंने पढ़ने के बाद यह पुस्तक दसियों लोगों को भेंट की और पढ़ने को प्रेरित किया ताकि प्रेम का सही अर्थ पता चले। इसी क्रम में दुष्यंत कुमार को पढ़ा तो फिर रुका ही नहीं।

''हो गई पीर
पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से फिर
कोई गंगा निकलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो
तेरे सीने में ही सही
हो कहीं भी आग
लेकिन आग जलनी चाहिए।''

गजलों में हिंदी शब्दों के प्रयोग की नई रीत चलाई दुष्यंत कुमार ने। बाबा नागार्जुन, धूमिल को पढ़कर साम्यवाद को जाना। कबीर को पढ़ा तो मानवतावाद में पहुंच गया। मीर, मोमिन, गालिब, फैज अहमद फैज, अहमद फराज, परबीन शाकिर, गुलजार, तहजीब हाफी को पढ़ा तो एक नए रूमानी स्वप्न में खो सा गया। बेगम अख्तर, मुन्नी बाई, बड़े गुलाम अली साहब, हरि प्रसाद चौरसिया, शिव कुमार शर्मा, पंडित जसराज, अमजद अली खान को सुनकर लगा कि साहित्य कितना जरूरी है इंसानी रूह को बचाये रखने के लिए। श्याम बेनेगल, सईद जाफरी, प्रकाश झा जैसे फिल्मकारों की फिल्में जैसे कि मंथन, आक्रोश, अर्धसत्य, दामुल व भारत एक खोज जैसे वृत्तचित्रों को देखकर स्वयं में एक अलग ही तरह के ज्ञान और सम्पूर्णता का उदय होते हुए भी मैंने देखा। राजा रवि वर्मा, अमृता शेरगिल, मकबूल फिदा हुसैन की चित्रकारी ने साहित्य के प्रति मेरी निष्ठा को और भी मजबूत कर दिया। साहित्य के प्रति इस प्यार ने मुझे मेरी बेहतरीन लाइब्रेरी मेरे घर में प्रदान की है।

साहित्य ने मुझे इस तरह गढ़ा है कि मुझे हिंदी और उर्दू दो बहने लगती हैं और हिन्दू और मुस्लिम नाखून और मांस की तरह जुड़े हुए लगते हैं। साहित्य सचमुच में मनुष्य और समाज को गढ़ने का काम करता है, इसमें कोई दो राय नहीं। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009